



DR. HANUMANTHA RAO PASUPULETI

Dr. Hanumantha Rao Pasupuleti is a practicing pediatrician, rehabilitation Specialist and Founder - Chairman of Sweekaar Academy of Rehabilitation Sciences at Hyderabad, Telangana.

2. Born on 16th September, 1945 at Hyderabad in a family of Doctors, Dr. Pasupuleti, completed MD Pediatrics in 1975. Not satisfied with his routine practice, he had a great inner urge to serve - the Divyangjans. Refusing the Government job and leaving his lucrative practice, he went to Bombay and had special training in Rehabilitation Medicine at All India Institute of Physical Medicine and Rehabilitation and completed Ph.D in Rehabilitation Psychology.

3. Dr. Pasupuleti founded a special school for the intellectually impaired children in the year 1977 in his garage and part of the clinic with 5 children and 2 special teachers, with the name "The Hyderabad Special School for Children in need of Special care". As the services expanded, the name was changed to Sweekaar Academy of Rehabilitation sciences. He also established special school for the Deaf & junior college in year 1986. Till date 745 hearing impaired persons have been employed in Government Sector and 672 in the private sector.

4. Realizing the great shortage of trained manpower to provide rehabilitation services, Dr. Pasupuleti introduced two diploma courses in Special Education in 1986 which later expanded to 30 training programmes producing 8071 professionals across Diploma, UG, PG, Post PGs in Special Education, Speech & Audiology & Clinical Psychology, including Doctorate in Clinical Psychology affiliated to OU and RCI, Government of India.

5. Dr. Pasupuleti as a Visionary & Missionary has been providing services to all types of Disabled under one roof, for all age groups and service by all types of specialists. He served 85.75 Lakhs persons with disabilities for 46 years. He left no stone unturned to reach the unreached to care the uncared sections of the society, by conducting screening programmes in schools, slums, rural, urban areas, Colleges, Private & Government Offices. He started mobile health clinics in rural area and charitable clinic in Sweekaar. He also started three campuses in Kadapa, Guntur and Tandur.

6. Dr. Pasupuleti employed 105 Divyangjans in Sweekaar, 640 Divyangjans in the community for which he received Award by President of India in 1994. Dr. Rao extended services to needy through oxygen bank, home for senior citizens, drug de addiction centre, artificial limb center, integrated rural rehabilitation center for adult mentally handicapped, state information center for Disabled, early intervention center for Children with Developmental Delays, Autism, Attention Deficit Hyperactive Disorder, Learning Disability, Institute for Mentally ill patients in addition to developing training programmes in Special Education, Speech & Audiology & Clinical Psychology.

7. Dr. Pasupuleti received Dr. B.C. Roy Award in 1995. He also received National Awards for 5 times from The Presidents of India. He received 56 awards from Private Institutions & State Governments and 9 International Awards.



डॉ. हनुमंत राव पसुपुलेटी

डॉ. हनुमंत राव पसुपुलेटी एक बाल रोग विशेषज्ञ, पुनर्वास विशेषज्ञ और हैदराबाद, तेलंगाना में स्वीकार एकेडमी ऑफ रिहैबिलिटेशन साइंसेज के संस्थापक — अध्यक्ष हैं।

2. 16 सितंबर, 1945 को हैदराबाद में डॉक्टरों के परिवार में जन्मे, डॉ. पसुपुलेटी ने 1975 में बाल रोग में एमडी पूरी की। वह अपने दैनिक चिकित्सा कार्य से संतुष्ट नहीं थे, उनके अंदर दिव्यांगजनों की सेवा करने की तीव्र इच्छा थी। वह सरकारी नौकरी तुकरा कर और अपनी लाभदायक प्रैक्टिस छोड़कर बंबई गए और ऑल इंडिया इंस्टीट्यूट ऑफ फिजिकल मेडिसिन एंड रिहैबिलिटेशन में पुनर्वास चिकित्सा में विशेष प्रशिक्षण लिया तथा पुनर्वास मनोविज्ञान में अपनी पीएचडी पूरी की।

3. डॉ. पसुपुलेटी ने वर्ष 1977 में 5 बच्चों और 2 विशेष शिक्षकों के साथ अपने गैराज में बौद्धिक रूप से दिव्यांग बच्चों के लिए एक विशेष स्कूल और क्लीनिक का एक हिस्सा खोला, जिसका नाम “विशेष देखभाल की जरूरत वाले बच्चों के लिए हैदराबाद स्पेशल स्कूल” था। सेवाओं के विस्तार के साथ इसका नाम बदलकर स्वीकार एकेडमी ऑफ रिहैबिलिटेशन साइंसेज कर दिया गया। उन्होंने वर्ष 1986 में बधिरों के लिए विशेष विद्यालय और जूनियर कॉलेज की भी स्थापना की। अब तक 745 श्रवण बाधित व्यक्तियों को सरकारी क्षेत्र में और 672 को निजी क्षेत्र में नौकरी मिल चुकी है।

4. पुनर्वास सेवाएं प्रदान करने के लिए प्रशिक्षित जनशक्ति की भारी कमी को महसूस करते हुए, डॉ. पसुपुलेटी ने 1986 में विशेष शिक्षा में दो डिप्लोमा पाठ्यक्रम शुरू किए जिनका बाद में विस्तार करते हुए 30 ट्रेनिंग प्रोग्राम शुरू किए गए जिनसे ओयू और आरसीआई, भारत सरकार से संबद्ध क्लीनिकल साइकोलॉजी में डॉक्टरेट सहित स्पेशल एजुकेशन, स्पीच एंड ऑडियोलॉजी तथा क्लीनिकल साइकोलॉजी में डिप्लोमा, यूजी, पीजी, पोस्ट पीजी वाले 8071 पेशेवर तैयार हुए।

5. डॉ. पसुपुलेटी द्वारा एक दूरदर्शी और परोपकारी के रूप में सभी आयु वर्ग के हर तरह के दिव्यांगों विकलांगों को एक ही स्थान पर तमाम विशेषज्ञों द्वारा सेवाएं प्रदान की जा रही हैं। उन्होंने 46 वर्ष तक 85.75 लाख दिव्यांग व्यक्तियों की सेवा की। उन्होंने स्कूलों, मलिन बस्तियों, ग्रामीण, शहरी क्षेत्रों, कॉलेजों, निजी और सरकारी कार्यालयों में स्क्रीनिंग कार्यक्रम आयोजित करके समाज के उपेक्षित और वंचित वर्गों की देखभाल के लिए उन तक पहुंचने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्र में मोबाइल स्वास्थ्य क्लीनिक और स्वीकार में चैरिटेबल क्लिनिक शुरू किया। उन्होंने कडप्पा, गुंटूर और तंदूर में तीन कैंपस भी शुरू किए।

6. डॉ. पसुपुलेटी ने स्वीकार में 105 दिव्यांगजनों को, समुदाय के 640 दिव्यांगजनों को रोजगार दिया, जिसके लिए उन्हें 1994 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा पुरस्कृत किया गया। उन्होंने ऑक्सीजन बैंक, वरिष्ठ नागरिकों के लिए घर, नशामुक्ति केंद्र, कृत्रिम अंग केंद्र, मानसिक रूप से दिव्यांग वयस्कों के लिए एकीकृत ग्रामीण पुनर्वास केंद्र, दिव्यांगों के लिए राज्य सूचना केंद्र, विकास अवरुद्धता वाले बच्चों के लिए अर्ली इंटरवेंशन सेंटर, ऑटिज्म, अटेंशन डेफिसिट हाइपरएक्टिव डिसऑर्डर, सीखने की अक्षमता, स्पेशल एजुकेशन, स्पीच एंड ऑडियोलॉजी और क्लीनिकल साइकोलॉजी में प्रशिक्षण कार्यक्रम तैयार करने के अलावा मानसिक रूप से बीमार रोगियों के लिए संस्थान स्थापित करके जरूरतमंदों को सेवाएं प्रदान कीं।

7. डॉ. पसुपुलेटी को 1995 में डॉ. बीसी रॉय पुरस्कार प्रदान किया गया। उन्हें भारत के राष्ट्रपति से 5 बार राष्ट्रीय पुरस्कार भी प्राप्त हुए। निजी संस्थानों और राज्य सरकारों से भी उन्हें 56 पुरस्कार और 9 अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हुए।